P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-4* ISSUE-10* June- 2017
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

खोखर जाति का उद्‌गम

संजीव कुमार सिंह
पूर्व शोध छात्र,
इतिहास विभाग
श्री वार्ष्णेय महाविद्यालय,
अलीगढ़

सारांश

प्रस्तुत शोध–पत्र में खोखर जाति के उद्‌गम पर प्रकाश डाला गया है। भारत की उत्तर–पश्चिम सीमा पर फैले हुए विशाल पर्वतीय भू–क्षेत्र में, जिसे साल्ट रेंज अथवा नमक कोह क्षेत्र अथवा कोह–ए–जूद भी कहा जाता है, अनेक पर्वतीय जातियॉ निवास करती थी, जिनमें से एक खोखर जाति भी थी। रामस्वरूप जून खोखर जाति की प्राचीनता महाभारत काल तक लेकर जाते हैं। मिनहाज–उद्–दीन सिराज खोखरों को हिंदू तथा काफिर कह कर सम्बोधित करता है। फरिश्ता बताता है कि खोखर मूल रूप से हिंदू थे किन्तु कालांतर में वे मुसलमान, राजपूत तथा जाट तीन वर्गों में विभक्त हो गये थे। शोध–पत्र में दर्शाया गया है कि खोखर जाति योद्धाओं का एक समूह था, जिसने मौहम्मद गौरी की हत्या की थी तथा गयासुद्‌दीन तुगलक को सिंहासन प्राप्त करवाने में अपनी शूरवीरता से योगदान किया था। अंततः शोध–पत्र में यह ही बताया गया है कि भारत की उत्तर–पश्चिम सीमा पर निवास करने वाली पर्वतीय जातियों में एक खोखर मूलरूप से हिंदू तथा जाट थे।

मुख्य शब्द : खोखर, अफगानिस्तान, बलूचिस्तान, जाट

प्रस्तावना

खोखर जाति से सम्बन्धित हमारे अध्ययन में इस तथ्य का नितांत अभाव पाया जाता है कि अंततः इस इतिहास प्रसिद्ध खोखर जाति की उत्पत्ति कहॉ से हुई है। इसी असमंजस की स्थिति पर ध्यान केन्द्रित करते हुए यह शोध–पत्र तैयार किया है और खोखर जाति की उत्पत्ति के संदर्भ में प्रमाणिक तथ्य प्रस्तुत करने का भी प्रयास किया है।

शोध–पत्र का उद्‌देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्‌देश्य खोखर जाति के उद्‌गम के सम्बन्ध में नवीन तथ्यों का अन्वेषण करना है साथ ही प्रस्तुत शोध–पत्र का उद्‌देश्य 'खोखर' शब्द तथा उससे साम्य रखने वाले शब्दों के मध्य के सह–सम्बन्ध की व्याख्या करना भी है।

शोध संकल्पना

शोध–पत्र के आधार पर शोध की संकल्पना को निम्न बिंदुओं के आधार पर व्याख्ति करने का प्रयास किया गया है–

1. शोध पत्र की परिकल्पना में खोखर जाति की उत्पत्ति का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।
2. शोध–पत्र की परिकल्पना प्राचीन काल से आरम्भ कर वर्तमान तक 'खोखर जाति की सही पहचान पर केंद्रित है।
3. शोध–पत्र की परिकल्पना प्रत्यक्ष एवं पूर्ण रूप से खोखर जाति से सम्बद्ध है।
4. प्रस्तुत शोध–पत्र की परिकल्पना प्रत्यक्ष रूप से निष्पक्ष, वस्तुनिष्ठ, व्यवहारिक तथा यथार्थ पर आधारित है।

शोध प्रविधि

शोध–पत्र के विषय से सम्बद्ध प्राचीन एवं मध्यकालीन भारतीय इतिहास से सम्बन्धित तात्कालिक एवं परवर्ती ऐतिहासिक ग्रथों का अध्ययन किया गया। शोध कार्य को पूर्ण करने हेतु खोखर जाति से सम्बन्धित तथ्यों का संकलन किया गया उसके उपरांत प्राप्त तथ्यों का विश्लेषण किया गया। विश्लेषण के उपरांत प्राप्त तथ्यों के आधार पर 'खोखर जाति के उद्‌गम' के सम्बन्ध में एक परिष्कृत विचार स्थापित करने का प्रयास किया गया है।

भारत की उत्तर–पश्चिम सीमा पर फैले हुए विशाल पर्वतीय भू–क्षेत्र में अनेकों मूल पर्वतीय जातियां निवास करती थीं। इस विस्तृत भू–क्षेत्र में से सभी महत्वपूर्ण रास्ते गुजरते थे। सिन्ध सागर दोआब में उत्तरी क्षेत्र के आधे भाग में पर्वत श्रेणियों की एक श्रंखला बनी हुई है जिसे साल्ट रेंज अर्थात नमक कोह क्षेत्र कहा जाता है। इसी को कोह–ए–जूद भी कहा गया है। मध्य युग के प्रारम्भ में अनेकों जातियां इस परिक्षेत्र में स्थापित थीं जिनमें मुख्य रूप से खोखर, अवान और जंजॉस महत्वपूर्ण थीं। इनका बहुत लम्बे समय से राजनैतिक और

सैनिक अस्तित्व स्थापित था। झेलम और चिनाव घाटियों में राजनैतिक अस्तित्व के लिए जब सैनिक संघर्ष होता तो उनकी भूमिका अति महत्वपूर्ण दिखाई देती है।

विष्णु पुराण और वायु पुराण में कोकरकस (Kokarkas) शब्द का उल्लेख प्राप्त होता है।[1] रामस्वरूप जून महाभारत के सभा पर्व का सन्दर्भ देते हुए वर्णन करते हैं कि युधिष्ठिर के राज्याभिषेक के अवसर पर उपस्थित राजाओं में एक कोकर (Kokar) अथवा खोखर भी थे।[2] खोखर प्राचीन भारत की करकरा जाति का प्रतिनिधित्व करते थे। पाणिनी ने अपने सूत्र में परसकरा और करसकरा का उल्लेख किया है।[3] ऐसा प्रतीत होता है कि सिंध का पश्चिमी क्षेत्र परसकरा कहलाता था और उसका पूर्वी क्षेत्र करसकरा कहलाता था। ये व्याख्या इस तथ्य से प्रमाणित और संपुष्ट होती है कि खोखर झेलम नदी के दोनों तटीय क्षेत्र में मूल रूप से रहते थे। यह पूर्ण रूप से हिन्दू थे और जाट थे।[4] तत्कालीन लेखकों ने भी विशेष रूप से मिनहाजुद्दीन सिराज ने भी खोखरों को हिन्दू माना है और काफिर कहा है।[5]

खोखर जाति पंजाब की मूल पर्वतीय जाति थी। ये तथ्य निर्विवाद रूप से स्वीकार किया जा चुका है कि वे मूल रूप से हिन्दू थे और उन्होंने मध्य एशिया से आने वाले आक्रामणों का अपनी सैनिक क्षमता के बल पर निरंतर प्रतिरोध किया।[6]

पंजाब में अनेकों किसान थे जो कि सैनिक जाति में अपने को सुगमतापूर्वक परिवर्तित कर लेते थे। पंजाब में अनेकों मजबूत जातियां निवाकरती थीं जैसे कि खोखर, जॉजूस, लोधा, बौतास, चीनास, सुमरा, बहराइच, चीमा, अवान, निज्जर, मेव इत्यादि थे। ये आसानी से अपने हल छोड़कर हाथ में तलवार लेकर विद्रोहों में, उत्पातों में और बाहर से होने वाले आक्रमणों में प्रमुख भूमिका निभाते थे। जैसे ही सरकार की ताकत कम होती थी या उसके संगठन में कोई कमी आती थी ये लोग तुर्की शासन को छिन्न–भिन्न करने को उठ खड़े होते थे। शिहाबुद्दीन मुहम्मद गौरी के भारत पर आक्रमणों के दौरान कुछ खोखरों ने इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया था। लेकिन उसके भारत छोड़ते ही वे फिर विद्रोह की मुद्रा में खड़े हो गये और उन्होंने वापस अपने हिन्दू धर्म को स्वीकार कर लिया और इस्लाम धर्म त्याग दिया। झेलम और चिनाव के खोखरों ने उत्पात, लूटमार और विद्रोह खड़ा कर दिया। उनका एक शासक देवल का पुत्र जो कि कोह–ए–जूद का शासक था और जिसने इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया था फिर से अपने पैतृक धर्म में पहुँच गया था। उनमें से एक अमकमल ने मुल्तान पर अधिकार भी कर लिया था। ये इतने घातक और खतरनाक हो गये थे कि पंजाब से किसी भी प्रकार से कोई कर अथवा धनराशि शिहाबुद्दीन को सूबेदार मुहम्मद इब्न–अबी–अली भेजने में नाकामयाब रहा।[7]

फरिश्ता ने स्पष्ट रूप से लिखा है कि खोखर, गक्खर और कक्कर तीन अलग–अलग जातियां थीं। लेकिन ये तीनों परस्पर एक दूसरे से सम्बद्ध थीं। खोखर भारतीय मूल के थे और वे भारत में मुस्लिम विजय से पूर्व आने वाले विदेशी आक्रमणों से सम्बन्धित थे। वे झेलम के दोनों किनारों पर मियॉवाली से लेकर झाँग मगिहाना तक तथा मुख्य रूप से पंजाब से शाहपुर जिले में निवास करते थे। खोखर मुसलमान, राजपूत और जाट इन तीन वर्गों में विभक्त हो गये थे। गक्खर फारसी मूल के थे। वे भारत की आक्रमणकारी जातियों से सम्बन्धित थे। गक्खर पंजाब में अरावली, झेलम तथा रावलपिंडी जिलों में, उत्तर–पश्चिमी सीमा क्षेत्र पर हजारा जिले में तथा चिनाब के पश्चिम में जम्मू के क्षेत्र में निवास करते थे।[8]

कक्कर अफगान थे। वे उत्तरी बलूचिस्तान में रहते थे। गक्खर और कक्कर मुस्लिम थे।[9] खोखर अफगानिस्तान में निवास करने वाली एक जाट जाति थी।[10]

खोखर जाति का उद्‌गम तात्कालिक सभी उपलब्ध स्रोतों के आधार पर प्रतीत होता है कि वे पंजाब की मूल पर्वतीय जाति में से एक थी। जिसका मुख्य व्यवसाय कृषि था। परन्तु राजनैतिक उथल–पुथल की स्थिति ने उन्हें किसान के साथ–साथ पेशेवर सैनिक बनने के लिए भी मजबूर कर दिया।

खोखर जाति झेलम और चिनाब के दोनों ओर विशाल क्षेत्र में स्थापित होने के कारण मुख्य मार्गों से आने वाले आक्रमणकारियों के आगे अपनी पहचान बनाए रखने के लिए मजबूर हुए। अन्य स्थानीय मूल जातियों ने या तो समझौता किया या धर्म परिवर्तन किया अथवा पराजित होकर लुप्त हो गये। परन्तु खोखर जाति जिसे तात्कालिक मुस्लिम लेखक निरंतर विधर्मी कहते रहे और काफिर मानकर उनके साथ शत्रुतापूर्ण व्यवहार करते रहे, महमूद गजनवी के आक्रमण रहे हों या मुहम्मद गौरी के आक्रमण हों खोखर जाति ने विदेशी आक्रमणकारियों से कोई समझौता नहीं किया बल्कि स्थानीय सैनिक शक्तियों का साथ देकर उनका मार्ग रोका व सैन्य प्रतिरोध किया। इसलिए हसन निजामी, मिनहाज–उद्‌दीन सिराज, फरिश्ता जैसे लेखकों ने खोखरों को स्थानीय मूल का हिन्दू जाट कहा है। इनमें से कुछ ने धर्म परिवर्तन किया भी तो बहुत कम समय के लिए। मुहम्मद गौरी के अपने देश वापस जाते ही वे अपने पैतृक धर्म में वापस आ गए और गौरी की सत्ता को पंजाब से उखाड़ फेंकने में अपनी पूरी ताकत झोंक दी। परिणाम स्वरूप मुहम्मद गौरी को उनका मुकाबला करने के लिए अंतिम बार हिन्दुस्तान स्वयं आना पड़ा। उन्हीं के प्रयासों के परिणाम स्वरूप मुहम्मद गौरी का पतन भी हुआ। अनेकानेक पर्वतीय जातियों में खोखर ही एकमात्र ऐसी शक्ति उभरकर सामने आये जो लगातार दिल्ली के सुल्तानों के खिलाफ पंजाब में प्रतिरोध करते रहे और दिल्ली सल्तनत को एकीकृत राज्य न बनने देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। निःसंदेह वे हिन्दू थे, उनके संस्कार हिन्दू थे और वे एक ऐसी अडिग और समझौता न करने वाली जाति थे जिन्होंने दिल्ली के सुल्तानों को पंजाब में निरंतर नियंत्रण के लिए सैनिक अभियानों को भेजने के लिए मजबूर किया। खोखरों के जितने भी नेता इस क्षेत्र में हुए वे सब दिल्ली के सुल्तानों और मुस्लिम आक्रमकों के द्वारा विधर्मी अथवा काफिर ही कहे गये। खोखर न तो बलूचिस्तान के निवासी थे, न अफगानिस्तान

के और न वे पारसी थे वे वस्तुतः अपने स्वभाव, अपने व्यवसाय आवासीय, परिवेश और ऐतिहासिक परंपरा के अनुसार भारतीय मूल के थे और पंजाब की मूल पर्वतीय जातियों में से एक प्रमुख जाति थी।

गौरी का पहाड़ी क्षेत्र गजनी और हिरात के बीच में स्थित था। गौर वंश पहले गजनवी वंश के अधीन था, लेकिन महमूद गजनवी की मृत्यु के बाद मध्य–एशिया की राजनीतिक स्थित में आमूल–चूल परिवर्तन हो गया। महमूद गजनवी ने गोर का राज्य पूरी तरह से विजित कर लिया था। लेकिन फिर भी उसने शंसबानी वंश के शासक को अपनी अधीनता में गोर का शासक बने रहने की अनुमति दे दी थी। महमूद गजनवी के बाद अन्य गजनी शासकों के काल में भी गोर राज्य में शंसबानी तुर्क ही शासक रहे किन्तु गजनी शासकों के स्वामित्व को स्वीकार करते रहे। बाद में जब गजनी का राज्य कमजोर हो गया और मध्य–एशिया की राजनीति में सल्जूक तुर्कों का प्रभाव बढ़ गया तो गोर शासकों ने गजनी वंश की अधीनता के जुए को उतार फेंका और सल्जूक तुर्कों की अधीनता स्वीकार कर ली। 12वीं सदी के प्रारंभ से ही गोर शासक महत्वाकांक्षी होने और उन्होंने गजनी वंश के शासकों से प्रतिस्पर्धा करना प्रारंभ कर दिया। धीरे–धीरे यह प्रतिस्पर्धा संघर्ष में बदल गयी। इसी संघर्ष के चलते पहले तो गजनी का राज्य गिज तुर्कों के हाथ में आ गया और फिर 1173–74 ई0 में शिहाबुद्दीन ने गजनी को जीत लिया। इसी शिहाबुद्दीन को मुईजुद्दीन मुहम्मद गोरी[11] के नाम से जाना जाता है। गजनी पर अधिकार के बाद गोरी पंजाब पर अपना स्वाभाविक अधिकार समझता था। महमूद गजनवी की मृत्यु के बाद गजनवी वंश कमजोर भी हो गया था। गजनवी वंश के शासक भारत में अपनी ताकत को स्थापित करने में सफल नहीं हो सके थे।[12] खोखर भी पहले गजनवी वंश के विरोधी थे। महमूद गजनवी जैसी शक्ति से भी उन्होंने हार नहीं मानी थी और उससे जमकर संघर्ष किया था।[13] लेकिन महमूद गजनवी के वंशजों के काल में यह शत्रुता समाप्त हो गयी थी। एक तो गजनवी वंश महमूद गजनवी के बाद दुर्बल हो गया था और दूसरे जम्मू के शासकों की शत्रुता ने भी गजनवी वंश के शासकों को खोखरों से संधि कर लेने के लिए विवश कर दिया। दूसरी ओर खोखर भी अब तक जम्मू के शासकों को कर अदा कर वहाँ निवास करते थे।[14] किन्तु अब वे इस परिक्षेत्र में एक स्वतंत्र शक्ति के रूप में स्थापित हो गये थे और जम्मू के शासकों की अधीनता में रहने को तैयार न थे। खोखरों ने अपना एक स्वतंत्र राजनैतिक अस्तित्व भी कायम कर लिया और जम्मू के शासकों से पृथक होकर अपनी सूझ–बूझ से उन्होंने राजनीतिक सम्बन्ध स्थापित करना प्रारंभ कर दिया। मुहम्मद गोरी के भारत की ओर बढ़ते हुए कदमों को देखकर खोखरों ने जो व्यवहार किया वह उनकी राजनीतिक कुशलता का परिचायक है। मुहम्मद गोरी ने 12वीं सदी में भारत पर कई बार आक्रमण किये थे। इन सभी आक्रमणों में से कई आक्रमणों में खोखरों ने मुहम्मद गोरी का प्रबल प्रतिरोध किया। खोखरों ने न केवल मुहम्मद गोरी से संघर्ष किया बल्कि कई बार उसे युद्ध भूमि से खदेड़ भी दिया। इसी समुदाय ने मार्च 1206 ई0 में नमक कोह क्षेत्र में मुहम्मद गौरी की हत्या कर दी थी। भारत में तुगलक वंश की स्थापना में गयासुद्दीन तुगलक का एक महान खोखर सेनानायक था, जिसका नाम गुलचंद था, जो उस काल के 'रूस्तम' के रूप में जाना जाता था। एक अन्य खोखर सहजराय भी गाजी मलिक का प्रमुख योद्धा था।[15] भारत में खोखर आमतौर पर हिंदू होते हैं जबकि पाकिस्तान में वे मुस्लिम होते हैं।[16] जैसे कि भारत में नियुक्त रहे पाकिस्तान के विदेश सचिव रियाज खोखर। अंततः शोध–पत्र के निष्कर्ष के आधार पर यह कहा जा सकता है कि भारत के उत्तर–पश्चिम सीमा पर निवास करने वाले पर्वतीय जातियों में एक खोखर मूल रूप से हिंदू तथा भारत के जाट समुदाय से सम्बन्धित है।

निष्कर्ष

शोध–पत्र के निष्कर्ष द्वारा खोखर जाति के उद्गम के सम्बन्ध में यह तथ्य प्राप्त होते हैं कि प्राचीन काल एवं मध्यकाल में भिन्न–भिन्न नामों से सम्बोधित की जाने वाली खोखर जाति का साम्य भारत की जाट जाति से प्राप्त होता है तथा इस जाति की उत्पत्ति भारत के पश्चिमोत्तर सीमा पर निवास करने वाले कृषक एवं जाट समुदाय से हुई है, यह निष्कर्ष प्रस्तुत शोध–पत्र में दर्शाया गया है। एक शोध प्रबंध के माध्यम से खोखर जाति के उद्गम से सम्बन्धित सिद्धांतों में परिवर्तन सम्भव है और किसी भी नवीन सिद्धांत की स्थापना की जा सकती है।

सुझाव

भारत की प्राचीन एवं मध्यकालीन खोखर जाति से सम्बन्धित अन्य विषयों पर भी एक समग्र शोध किया जाना चाहिए ताकि भारतीय इतिहास में कई नवीन आयाम स्थापित किये जा सकें।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *Dahiya, Bheem Singh - Jats and Ancient Rulers, Page-262, 1980 Sterling Publishers Pvt. Ltd., 1980*
2. *Joon, Ramswaroop, History of the Jats, Page-32, Beta Script Publishing, 2010*
3. *पाणिनी –सूत्र– VI, I पृष्ठ संख्या 147*
4. *Dr. Fauja Singh-History of the Punjab, Vol-III, P.No. 226, Pub. By- Punjabi University, Patiyala*
5. *मिनहाजुद्दीन सिराज– तबकात–ए–नासिरी, पृष्ठ संख्या 169*
6. *Dr. A.B.M. Habibullah-The Foundation of Muslim Rule in India, P.No. 369, Publisher-central Book Depot, 1961*
7. *Dr. Fauja Singh-History of the Panjab-Vol. III Page No. 211.*
8. *Farishta-Tarikh-i-Farishta-Part-I, P. 156.*
9. *Gakhars in encyclopaedia of Islam; Punjab census report, 1881, P.No. 149.*
   Punjab district Gazzetters on Attock, Shahpur and Rawalpindi; Indian historical quarterly, XV, 1939, 49n; Journal Asiatic society of Bengal XL 1871.
10. *Bellew , H.W.-An Inquiry into the Enthrography of Afganistan, Page-186, Pub.-Indus Publication, Karanchi, 1977*

11. *इलियट एवं डाउसन– भारत का इतिहास, द्वितीय खण्ड, पृ0सं0 212 पाद टिप्पणी–1 उस सुल्तान को मुहम्मद गोरी या मुहम्मद साम कहा जाता है। इब्न–उल असीर, फरिश्ता और एलफिस्टन ने शहाबुद्दीन गोरी लिखा है। इसके सिक्कों पर सुल्तानुल आजम मोइजुद्दीन व उद्दीन अबुल मुजफ्फर मो0 बिन साम अंकित है।*
12. *Wolseley Haig-The cambridge history of India, Vol. III, Turks & Afghans P.No. 39,Cambridge University Press, 1928.*
13. *Ibid, P.No. 15-16.*
इलियट एवं डाउसन–भारत का इतिहास–द्वितीय खण्ड, पृ0सं0 321–22.
14. *Wolseley Haig-The cambridge history of India, Vol. III, Turks & Afghans P.No. 39, Cambridge University Press, 1928.*
15. *Isami, Abu Bakr- Futuh's Salatin, By M. Hussain and Saiyyad A.A. Rizzvi, Page 587*
16. *Book of Muinuddin Chisti : Mehru Zafar, Page-121, Pub. Penguin Books, 2008.*